

क्रौञ्चानि m. wohl patron. von क्रौञ्चान्; pl. Sāṃsk. K. 184, a, 9.
 क्रौड, पिशित VARĀH. BRH. S. 33, 19. श्रवतार BHĀG. P. 11, 4, 18. 2, 7, 1
 liest die ed. Bomb. richtig क्रौडि.
 क्रौर्य VARĀH. BRH. S. 33, 72. मयि क्रौर्याण्यवर्तत KATHĀS. 106, 130.
 क्लान् mit परि, partic. °क्लान्त KATHĀS. 63, 10.
 क्लामयु m. = क्लामय HALĀJ. 2, 446 und KSHIRASV. zu AK. nach AUFRECHT.
 क्लिद्, क्लिन्नपाणि MBH. 12, 5163. Z. 1 vom Ende lies रक्तरचि.
 — या. सौहृदाक्लिन्नचेतम् *feucht* so v. a. *weich, gerührt* BHĀG. P. 10, 84, 58.
 — प्र vgl. प्रक्लिद् u. s. w.
 — वि, विक्लिन्नहृदय so v. a. *erweicht, gerührt* BHĀG. P. 10, 71, 25.
 क्लिन्न m. N. pr. eines Verfassers von Mantra bei den Çākta Verz.
 d. Oxf. H. 101, b, 13.
 क्लिप् 1) a) न त्वया लोकाः क्लिष्टं योग्यो न मानुषः R. 7, 20, 8. पुरुषं
 क्लिप्तोति क्लेशाः प्रसिद्धाः SARVADARÇANAS. 168, 13. — 2) गुणवत्तः
 क्लिप्तये प्रायेण भवति निर्गुणाः सुखिनः Spr. 844. क्लिप्तयति BHĀG.
 P. 10, 14, 4. mit transit. Bed. Spr. 4239. — 3) a) Spr. 5039. गुरुकु-
 लक्लिष्टो मुरारिः कविः 1239. Z. 4 fgg. अक्लिष्टकारिन् bedeutet *der*
Niemand ein Leid zufügt; अक्लिष्टं कस्यापि दुःखं यथा न भवति तथा
 कर्तुं शीलमस्य Schol. zu R. 1, 77, 19. — c) वृत्तयः पञ्चतयः क्लिष्टाक्लि-
 ष्टाः KAP. 2, 33. JOGAS. 1, 5. अक्लिष्टं मरणम् Spr. 2683. अक्लिष्टकर्मन् =
 अक्लिष्टकारिन्; s. oben u. 3) a). In der Rhetorik so v. a. *gezwungen*,
dunkel, nicht leicht verständlich: संवन्ध SĀH. D. 213, 21. PRATĀPAR. 61,
 a. 62, a. Verz. d. Oxf. H. 217, a, 14. क्लिष्टव n. SĀH. D. 574. 213, 20.
 — परि, partic. 1) न्योद्यपरिक्लिष्टस्य तत्र मे KATHĀS. 123, 210.
 — सम्, संक्लिष्टकर्मन् entweder *derjenige dem Alles schwer von der*
Hand geht oder *der Andern Leid zufügt* Spr. 5110; vgl. अक्लिष्टका-
 रिन् und अक्लिष्टकर्मन् oben u. क्लिप् 3) a) und c).
 क्लोतनक auch u. मधुवल्ली im ÇKDr.
 क्लोव (so die Bomb. Ausgg. des MBH. R. und BHĀG. P.) 2) क्लोवा
 (Gegens. ग्रीवाः) हि देवमेवैकं प्रशंसति न पौरुषम् Spr. 3989. क्लोवया वा-
 चा MBH. 3, 2801. अक्लोवचित KATHĀS. 78, 60.
 क्लोवता Schwäche: वज्रं तूष्णीवताम् (आयाति) Spr. 3372.
 क्लोव्य (von क्लोव), °यते *sich unmännlich —, sich verzagt beneh-*
men: (मदिरावत्याः) प्राप्ति पुरुषकारादि मुक्ता क्लोवयसे कथम् KATHĀS.
 104, 126. नायं क्लोवयितुं (यापयितुं ed. Bomb.) कालो विद्यते MBH. 6, 4334.
 क्लोवयोग m. eine Constellation, unter welcher Hermaphroditen u. s. w.
 gezeugt werden, VARĀH. BRH. 4, 13.
 क्लोदन 1) °भाव TATTVA. 15. — 2) lies Phlegma. — 3) Verz. d. Oxf.
 H. 223, a, 9 v. u.
 क्लोदिनी f. eine best. Pflanze HARIV. 3843. केतकी die neuere Ausg.
 und LAGL.
 क्लेश Plage VARĀH. BRH. S. 3, 61. im Joga SARVADARÇANAS. 154, 13.
 133, 12. 163, 10. 163, 5. fgg. 168, 9. रागद्वेषादयः क्लेशा उपक्लेशाश्च मदमा-
 नादयः bei den Buddhisten 20, 16. fg. — Vgl. दोषाक्लिशी.
 क्लेशल m. = क्लेश BHĀG. P. 10, 14, 4.
 क्लोव्य 2) यदि क्लोव्यं न गच्छति Spr. 2286.
 क्लोमन् KĀTH. 28, 9. TBR. Comm. 2, 671, 2 v. u. Nach den mahratti-
 schen Erklärungen zu ÇĀRṆG. SĀM. 1, 3, 22 soll dieses Organ (= तिल)

auf der rechten Seite des Leibes in der Nähe der Leber liegen.

क्ल 4) Z. 4 lies सूर्यप्रभवो. — 8) c) Spr. 3317. — 10) c) *bisweilen* AV.
 PRĀT. 3, 54.

क्लण्, बाला क्लण्ती (wohl *aufschreiend*) शयने ऽपतत् KATHĀS. 83, 25.
 क्लणित n. *Klang* (eines Schwertes) VARĀH. BRH. S. 30, 5. *Laut, Töne*: पत-
 त्रिणाम् KATHĀS. 69, 118. कलक्लणितगर्भेण कण्ठेन (einer Taube) Spr. 3881.
 क्लण् in der Bed. des caus.: वेणुं क्लणन् BHĀG. P. 10, 39, 30. 30, 18. —
 caus.: क्लणयंश्च वेणुम् BHĀG. P. 10, 44, 13. 16. क्लणितवेणु 21, 12. क्लणय-
 ती मणिनू पुरा-यां रेवे 60, 8.

— परि vgl. परिक्लणन.

क्लथ्, med.: तण्डुलान्क्लथते KĀTH. 11, 1. भर्जिता क्लथिता धाना प्रायेण
 बीजाय नेष्यते BHĀG. P. 10, 22, 26. संतापक्लथिताङ्गका KATHĀS. 90, 61. —
 caus. ÇĀRṆG. SĀM. 2, 2, 1.

— निम् vgl. निष्क्लथ.

क्लृ (3. कु + श्रृ) m. ein gewöhnlicher (Sāvāna-) Tag GAṆITĀDHJ. 26.
 — Vgl. तित्तिदिन.

क्लचित्क (von क्ल + चिद्) adj. f. ई irgendwo erscheinend TS. Comm.
 1, 23, 11. काशिकायां तु पञ्चरात्रेति क्लचित्कः पाठः। अथपाठः स इति ह-
 रदत्तः GOLD. u. अपपाठ.

क्लणा, सद्रत्नक्लणा° KATHĀS. 120, 106. SĀH. D. 329, 17.

क्लथ 1) VARĀH. BRH. S. 46, 49. ÇĀRṆG. SĀM. 2, 2, 1. *das Kochen* MIT.
 III, 37, b, 3.

क्लथयितव्य (von क्लथ्) adj. zu kochen, zu sieden VARĀH. BRH. S. 37, 2.
 क्लथा, im KĀTH. findet sich अनुक्लथाति 7, 7, 8, 10 und sonst. अनुक्लथा-
 तर् 26, 11. चक्लथाये (चक्लथाये RV.) 13, 5.

क्लण Z. 1. fg. MEGH. 87. 107 liest MALLIN. क्लण (also auch m.) इव und HIT.
 I, 109 (vgl. Spr. 3308) hat die v. l. gleichfalls क्लणः; sicher scheint n.
 zu stehen in Spr. 193. 1) क्लणमात्रानुरागिन् *dessen Zuneigung nur einen*
Augenblick währt HALĀJ. 2, 220. Sp. 323, Z. 19 lies 104, 19 st. 104, 9.
Moment, Phase: नीलादि° SARVADARÇANAS. 9, 9. 12. 108, 20. 109, 7. —
 2) = 1" 26" 24" WEBER, GJOT. 103. क्लणतत्क्रमयोः संवन्धसंयमाद्विवे-
 कज्ञानम् JOGAS. in Verz. d. Oxf. H. 231, b, 48. क्लणः सर्वात्यः कालावपयो
 यस्य कलाः प्रविभक्तुं न शक्यते Schol. ebend. = मुहूर्त d. i. 48 Minuten
 Ind. St. 10, 203. VARĀH. BRH. S. 11, 50. 86, 15. 98, 12. BRH. 2, 14. 18, 20.
 — 7) 8) HALĀJ. 3, 63.

क्लणभङ्ग m. bei den Buddhisten *der beständig vorsichgehende Ver-*
fall der Dinge, beständiger Wechsel SARVADARÇANAS. 12, 19. 117, 5. स्या-
 यित्वासिद्धौ क्लणभङ्गवादी वैद्वो विज्ञपेत 30, 16.

क्लणविधंस्मिन् 2) es sind die Buddhisten gemeint.

क्लणवृष्टि f. alsbald zu erwartender Regen VARĀH. BRH. S. 107, 4. —
 Vgl. सद्योवृष्टि.

क्लणशस् (von क्लण) adv. *auf Augenblicke*: लवशः क्लणशश्चापि न च तृष्टिः
 सुयोधनः MBH. 3, 2842. लवो ऽशः क्लणः स्वीकारः राज्यलेशस्य स्वीकारे (!)
 ऽपि न संतुष्ट इत्यर्थः क्रमेणा पञ्चार्थे सप्तम्यर्थे च शस्प्रत्ययः NILAK.

क्लणिक 1) Spr. 4609. KATHĀS. 90, 21. Bei den Buddhisten ist Allos क्ल-
 णिक *momentan, jeden Augenblick wechselnd* SARVADARÇANAS. 9, 7. fg. 84,
 20. *freie Zeit* —, *Musse habend* BHĀG. P. 11, 27, 44. HIT. I, 60 (Spr. 2332)
 hat die v. l. क्लणिकी. क्लणिकत्व *beständiger Wechsel* SARVADARÇANAS. 9, 9.